ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 220-222**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

वैदिक तथा वैदिकेतर भारतीय कला परम्परा में पद्म तथा पद्मावती

डॉ0 निर्मला गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर– प्राचीन इतिहास,जगत तारन गर्ल्स पी0जी0 कालेज, प्रयागराज (उ0प्र0) भारत

Received-08.08.2026, Revised-16.08.2026, Accepted-23.08.2026, **E-mail:nirmalagupta.bhu123@gmail.com**

सारांशः ***भारतीय संस्कृति में पद्म अथवा कमल अनेक अभिप्रायों को समाहित किये हुये दिखाई देता है। शेषशायी विष्णु की नाभि से कमल की उत्पत्ति हुई जिससे ब्रह्मा उद्भूत हुये। ब्रह्माजी स्वयं प्रजापति अर्थात् सृष्टि के रचयिता हैं।[1] विष्णु की स्तुति ही 'पद्मनाभं सुरेशं' कहकर की गयी है। पद्म जल से उत्पन्न हुआ अतएव वह स्वयं विश्व की उत्पत्ति का द्योतक है। यही कारण है कि भारतीय कला प्रतीक के रूप में इसे ब्राह्मण, जैन और बौद्ध तीनों धर्मों ने अंगीकार किया। भारतीय परम्परा में धर्म और अर्थ का मानवीकरण कर दैवीकरण कर दिया गया। यही देवी सरस्वती तथा देवी लक्ष्मी का मूलस्वरूप है। धर्म और अर्थ जीवन को सफल और समृद्ध बनाते है इसीलिए विश्व के पालनकर्ता विष्णु से इसे सम्बद्ध किया गया है।[2] पद्म नीरज भी है और पंकज भी। इसीलिए इसका सम्बन्ध निर्वाण से भी है और सम्बोधि तथा सम्प्रज्ञता से भी। निर्लिप्तता ज्ञान की उच्च स्थिति है। समाधि का ब्रह्म कमल और सहस्त्रदल कमल से निरूपण किया जाता है। पंकज स्वरूप निर्लिप्तता का प्रतीक है और निर्लिप्तता वैराग्य की सूचक है। अतः स्वभाविक रूप से श्रमण धर्म ने भी इस कला प्रतीक को स्वीकार किया है। विश्वसृष्टि का स्मरण दिलाने वाला यह कमल भारत का राष्ट्रीय पुष्प है।***

कमल ब्रह्मा का आसन है, सरस्वती का आसन है, विष्णु का आयुध है, लक्ष्मी का आसन है, श्री का आसन है तथा शक्ति का प्रतीक है। राम के नयन ही कमल पंखुड़ी जैसे थे, बुद्ध का आसन कमल है तथा तीर्थकरों का आसन भी कमल है, बौद्ध देवी प्रज्ञा को तथा सूर्य देव को कमल से ही सम्बद्ध किया गया है। बुद्ध को तो पद्मपाणि कहा गया है। अशोक के स्तम्भ शीर्ष पर तथा गुप्त राजाओं के सिक्कों पर कमल अंकित है।

कुंजीभूत शब्द– बौद्ध धर्म, महिला, भिक्षुणी संघ, महाप्रजापती गौतमी, थेरीगाथा, स्त्री–मुक्ति, लैंगिक समानता, बुद्ध, सामाजिक परिवर्तन।

प्रस्तावना– भारतीय धारणा के अनुसार जल स्त्री तत्त्व है, मातृत्व है, परमात्मा का क्रियात्मक तत्त्व है, प्रजनन तत्त्व है तथा विश्व रचना का ऐहिक या जागतिक तत्त्व है। कमल सृष्टिकर्ता के जननांग का प्रतीक है। इस प्रकार कमल पृथ्वी या जननी का प्रतीक है। यह देवी की आर्द्रता का सूचक है। कमल का दैवीयकरण मातृरूपा देवी है जिनके द्वारा विश्व का संजनन होता है। ऋग्वेद[3] में वशिष्ठ अर्थात् अग्नि को भी कमलोत्पन्न कहा गया है क्योंकि उर्वशी कमलरूपिणी पृथ्वी तत्त्व है। इसी कमल से कमला या पद्म से पार्वती का मूर्तन हुआ है।[4] ऋग्वेद में देवी को 'प्रज्ञानांभवति' माता कहा गया है।

देवी का पहला साहित्यिक वर्णन वेद के खिल भाग (पूरक भाग) में मिलता है। ऋग्वेद के श्रीसूक्त में देवी पद्मा को श्री तथा लक्ष्मी कहकर पुकारा गया है तथा वह हर सम्भव तरीके से पद्म से सम्बद्ध दिखाई गयी है। वह पद्मसंभवा (कमल से उत्पन्न), पद्मस्थिता (कमल पर खड़ी हुई) पद्मवर्णा (कमल के रंग की) पद्मउरु (कमल जैसी जंघावाली), पद्माक्षी (कमलनयनी), पद्मिनी पुष्करणिनी (कमलों से घिरी हुई) तथा पद्ममालिनी (कमलों की माला से भूषित) कही गयी है।[5]

जहां कमल हो चाहे देवी हों या नहीं उनकी व्याप्ति या उपस्थिति समझी जाती है। यह उनकी सर्वव्यापकता का लक्षण है। जैन देवी पद्मा, पद्महस्ता, पद्मपाणि हैं तो यही स्थिति बुद्धधर्म में बुद्ध की भी है। बोधिसत्व भी हाथ में पद्म लिए है क्योंकि वह प्रेम, सहानुभूति, दया, योग और अध्यात्म से पूर्ण है। पद्मपाणि अवलोकितेश्वर वरद मुद्रा में खड़े हैं। प्रज्ञापारमिता महायानी बुद्ध की शक्ति हैं जो महामहीयसीरूप में हैं। यही देवी का माया और महामायारूप है। वज्रधारा और वज्रसत्व कमल पर आसीन दिखाए जाते है क्योंकि कमल ब्रह्माण्ड की योनि, संजनन शक्ति का प्रतीक है, मुक्ति का प्रतीक है। जलतत्त्व के रूप में पंचभूत के दैवीयकरण का प्रयास देवी पद्मा हैं।

देवी पद्मा को कर्षिणी कहा गया है जो इस बात का प्रतीक है कि वह कृषि की संरक्षिका थीं। धान्य से ही धन और समृद्धि की कल्पना है। देवी के कर्दम (कीचड़ और चिकलित (आर्द्रता) दो पुत्र है। इस प्रकार यह उर्वरा भूमि का मानवीकरण है। वह माधवी (मधु जैसी) है। वह पशुपतेश्वरी हैं। धन, धान्य, स्वास्थ्य, संतान, सौभाग्य और जय प्रदान करती हैं।

कमल विराट मन का प्रतीक है और व्यष्टिगत प्राण शक्ति का भी। कमल प्राण का वह रूप है जो भूतों में समष्टिगत प्राण या जीवन का आवाहन करता है।[6]

भागवत धर्म के अनुसार संसार को भू–पद्मकोष कहा गया है और सृष्टि का जन्म पद्म से माना गया है। भागवतधर्म में दो प्रकार की सृष्टि मानी गयी है–पद्मजा तथा अण्डजा। पद्मजा सृष्टि क्षीरशायी विष्णु की नाभि से होती है। अण्डजा सृष्टि हिरण्यगर्भ से होती है। वैदिक मान्यता में जो स्थान हिरण्यगर्भ का है वही भागवतधर्म में पद्म का है। वेद के अनुसार पृथ्वी पर अग्नि और द्युलोक में आदित्य यह दो बड़े पुष्कर है। हिरण्यगर्भसृष्टि अग्नि पर तथा पद्मजा सृष्टि जल पर निर्भर है। मातृकुक्षि से जन्म लेने वाले शिशु का प्रतीक कमल है। अथर्ववेद में हृदय की तुलना कमल से की गयी है।

आरम्भिक जैन शासन में तथा जैन धार्मिक प्रतिमाओं के निर्माण में केवल तीर्थकरों की ही प्रतिमाएं बनती थीं क्योंकि वही देवाधिदेव का स्थान रखते थे किन्तु ज्यों–ज्यों जैन शासन देवी देवताओं का विकास हुआ उन्हानें बहुत से ब्राह्मण देवी, देवताओं को अपने शासन में अंगीकार किया और अपने पंथ के अनुकूल उनका विकास कर लिया। उन्होंने यह ध्यान रखा कि ब्राह्मण धर्म से जिन देवी देवताओं को लिया है उनका सामञ्जस्य जैन धारणाओं के अनुरूप हो। अतः वैराग्य, ध्यान, निर्लिप्तता और तपस्या उनके ध्येय बने रहे।

जैन चाहकर भी अपने तीर्थंकरों को दानमुद्रा, कल्याणमुद्रा या अभय मुद्रा में नहीं दिखा सके क्योंकि वे वीतरागी है, किसी को इच्छित वरदान नहीं देते। जैन आचार्यों के मन में यह विचार भी था कि उनका धर्म लोक समर्थन से ही उन्नति को प्राप्त होगा। लोक में बहुसंख्य उपासक तो देवताओं के पास, कुछ न कुछ इच्छा पूर्ति के लिए और सांसारिक विषयभोग की वस्तुओं की याचना के लिए ही जाते हैं। वीतरागी विषय विकार वाली वस्तु का वरदान दे नहीं सकते, अतः यही युक्ति उपयुक्त लगी कि ऐसे शासन देवी देवता स्वीकार किये जाएं, जो तीर्थंकरों के स्वरूप से इतर हों और जो बहुसंख्यक उपासकों की लौकिक संसिद्धियों की सम्पूर्ति में सहायक

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

हों। यह शासन देवी–देवता अथवा यक्ष–यक्षी तीर्थंकरों के साथ लोकपाल या संरक्षक देवी देवता के रूप में पूजे जाने लगे। यह सामान्य भक्तों की कामनाओं को पूर्ण करते थे और इच्छित वरदान देते थे। जैन धर्म ने अपने पंथ का विकास करते हुये तथा हिन्दूधर्म से सौहार्द्र कायम करते हुये हिन्दू देवी देवताओं को स्वीकार किया।[7]

जैनधर्म में 'पद्मावतीकल्प' जो पद्मादेवी का स्तुति ग्रन्थ है में देवी पद्मावती के विषय में उल्लेख है कि पद्मावती देवी पार्श्वनाथ प्रभु की शासन देवी हैं। उनके चारों हाथों में कमल, पाश, अंकुश और फल है। इस देवी का वाहन कुक्कुट और सर्प है। इनके मस्तक पर तीन से लेकर पांच तक सर्पफण है, तीन नेत्र है तथा इनका पुष्पवर्ण है।

'त्रिशष्टिशलाकापुरुषचरित' में[8] पद्मावती के विषय में कहा गया है कि कर्कुटजाति[9] के सर्प के वाहन से युक्त, सुवर्ण जैसे वर्णयुक्त, दोनों दक्षिण भुजाओं में पद्म और पाश तथा बायीं भुजाओं में फल और अंकुश धारण किये पद्मावती शासन देवी हुयी।

देवी पार्वती को जैनधर्म के श्वेताम्बर तथा दिगम्बर दोनों आम्नायों में प्रतिष्ठा प्राप्त थी।

पद्मावतीं देवीं कनकवर्णां कर्कुटवाहनां चतुर्भुजां
पद्मपाशान्वितदक्षिणकरां फलांकुंशाधिष्ठित वामकरां चेति।।

श्वेताम्बर ग्रन्थ 'निर्वाण कलिका'[10] में जहां कर्कुट वाहन है वहीं अन्य ग्रन्थों में वाहन कर्कुट सर्प है।[11] 'मंत्राधिराज कल्प'[12] में पद्मावती के सिर पर तीन सर्प फण के छत्र के प्रदर्शन का निर्देश है।

दिगम्बर परम्परा में पद्मावती को पद्मावाहना, चतुर्भुज, षड् और चतुर्विंशतिभुजा युक्त प्रदर्शित किया गया है। यहां वाहन हंस भी प्रदर्शित है। देवी के चौबीस हाथों में शंख, खड्ग, चक्र, अर्धचन्द्र (बालेन्दु), पद्य, उत्पल, धनुष, शक्ति, पाश, अंकुश, घण्टा, बाण, मूसल, खेटक, त्रिशूल, परशु, कुंत, भिण्ड, माला, फल, गदा, पत्र, पल्लव और वरद मुद्रा के प्रदर्शन का निर्देशन है।[13]

देवगढ़ के मन्दिर संख्या बारह की बाह्यभित्ति पर पद्मावती का अंकन अभिलेख सहित है तथा उनके चार हाथ वरदमुद्रा, पुष्प, पुस्तक और घट के साथ प्रदर्शित है। उनकी आकृति के ऊपर छोटी सी तीर्थकर आकृति उत्कीर्ण है। यह अपराजितपृच्छा के वर्णन के अनुरूप है।[14] 'पद्मावती दंडक' नामक ग्रंथ में पद्मावती को भयहारिणी तथा पार्श्वनाथ की सेविका बताया गया है। दाहिनी ओर दक्षिण दिशा में नागदेव त्राणदाता के रूप में तथा बायीं ओर गण दैत्यदानवों के विनाशक रूप में वर्णित हैं। यह देवी हंस पर आरूढ़ तीनों भुवनों को मोहित करती हैं।

राष्ट्रीय संग्रहालय[15] दिल्ली में धातु प्रतिमाओं में एक आयताकार पादपीठ पर पद्म पुष्प के आसन पर देवी पद्मावती पालथी मारे बैठी हुई दर्शायी गयी हैं। देवी के ऊपर तीन फण वाला नागछत्र है। देवी चतुर्भुजी हैं जिनकी दायीं भुजाओं में फल तथा वरदमुद्रा तथा बायीं भुजाओं में पद्म–पुष्प और जल कलश हैं। देवी के कंधों पर उत्तरीय है और वह सामान्य आभूषण पहने हैं। कुक्कुट बायीं ओर अंकित है जो खण्डित है। प्रतिमा के दो ओर माणियुक्त स्तम्भ हैं जिनपर त्रिपर्णतोरण आधारित है। तोरण शीर्ष पर भी कलश हैं।

इस प्रकार एक अन्य प्रतिमा[16] में वर्गाकार पादपीठ पर आधृत वृत्ताकार आसन पर चतुर्भुजी देवी पद्मावती ललितासन मुद्रा में बैठी है। दायीं ओर की पिछली भुजा में अंकुश और सामने की भुजा वरद मुद्रा में है। बायीं ओर की पिछली (खण्डित) भुजा में पाश तथा आगे की भुजा में फल है। पांच फण वाला नाग छत्र देवी को छाया दे रहा है। देवी के शीर्ष के ऊपरी भाग में पद्मासनस्थ तीर्थकर प्रतिमा है। कर्नाटक से प्राप्त प्रिन्स ऑफ वेल्स संग्रहालय, मुम्बई में संरक्षित चतुर्भुजी पद्मावती परम्परागत उपादान धारण किये हुये हैं।[17]

खुजराहो में धरणेन्द्र और पद्मावती की अनेक मूर्तियां हैं जिनमें सर्वाधिक सुन्दर शांतिनाथ मंदिर में प्रांगण के उत्तर पश्चिम कोणों में हैं। दो पृथक् पृथक् आसनों पर धरणेन्द्र और पद्मावती बैठे हैं। उनका बायां पैर मुड़ा हुआ है और दायां कमल पर रखा है। धरणेन्द्र घुटनों तक धोती पहने हैं और उनका उत्तरीय पैरों तक लटका है, उनके दायें हाथ में नारिकेल और बायें में कमल है जो अब खण्डित है, जब कि पद्मावती की कढ़ी हुई साड़ी उनके पैरों तक है और उत्तरीय भुजाओं को छूता हुआ पैरों तक आ गया है। आभूषणों से मण्डित पद्मावती के दायें हाथ में नारिकेल और बायें में शिशु है। धरणेन्द्र तथा पद्मावती के पीछे पृथक् पृथक् आभामण्डल हैं, उनके मध्य एक वृक्ष और अग्र भाग पर तीर्थकर मूर्ति उत्कीर्ण है। दोनों ओर विद्याधर है। चरण चौकी पर दोनों और एक–एक चामरधारिणी और दो–दो पुरुष आकृतियाँ अंकित हैं। एक अन्य मूर्ति खुजराहो संग्रहालय में है पर अधिक आकर्षक नहीं है। देवगढ़ में भी धरणेन्द्र–पद्मावती की अनेक मूर्तियाँ है जिनमें वह गोद में बालक को धारण किये हैं।[18] विमलवसही एवं ओसियाँ से प्राप्त पार्वती सामान्य लक्षण वाली हैं। वाराणसी, लखनऊ, शहडोल से पार्वती की जिन संयुक्त अनेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई है। खुजराहो, देवगढ़ के अतिरिक्त नालन्दा, बिहार, नवमुनि एवं बारहभुजी गुफा उड़ा से तथा दक्षिण भारत में कर्नाटक एवं तमिलनाडु से भी पद्मावती की मूर्तियाँ मिली है। कर्नाटक में यह सर्वाधिक लोकप्रिय थी।[19]

पार्वती को हिन्दू देवकुल की सर्प से सम्बद्ध लोक देवी मनसा से सम्बद्ध किया जाता है। मनसा को पद्मा या पद्मावती नामों से भी सम्बोधित किया गया है।[20] प्रो० मारुति नन्दन तिवारी के अनुसार जैन यक्षिणी पद्मावती की लाक्षणिक विशेषताँए मनसा से पूर्णतः भिन्न हैं।[21] हिन्दू परम्परा में विश्व की शक्ति के रूप में भी पद्मावती का उल्लेख है जो नाग पर आरूढ़ नागमाला से शोभित, चतुर्भुज, त्रिनेत्र, अर्धचन्द्र से सुशोभित करों में माला, कुम्भ, कपाल और नीरज से युक्त है।[22] यदि दिगम्बर परम्परा में देखें तो आयुधों में बड़ा साम्य दिखता है, यहाँ तक कि 'भैरव पद्मावती कल्प' में उन्हें त्रिनेत्र तथा त्रिपुरभैरवी भी कहा गया है।[23]

देखा जाये तो पद्मावती भारतीय परम्परा की सर्वव्यापक शक्ति का ही रूप है। उन्हें महालक्ष्मी के रूप में, भुवनेश्वरी के रूप में, पुस्तक धारिणी, हंसवाहिनी सरस्वती के रूप में नागरूपी कुण्डलिनी शक्ति के रूप में तथा आधिभौतिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक रूप में प्रदर्शित किया गया है।

इन देवी का तांत्रिक पूजा में भी स्थान है, इनके लिए आत्मचरित्र शुद्धि, चौसठोपचारपूजा का विधान है तथा आध्यात्मिक रहस्यों का वर्णन एवं चित्रण है।

पद्मावती को संकटमोचनी, विपदाहारी, रोगनाशिनी, पीड़ा विनाशिनी, दरिद्रनारायणी आदि कहा गया है। विमलसूरि कृत 'शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन' में उन्हें सरस्वती, दुर्गा, तारा, अदिति, लक्ष्मी, काली, त्रिपुर सुन्दरी, भैरवी, अंबिका, कुंडलिनी इत्यादि नामों से पुकारा गया है।[24] बौद्ध ग्रन्थ साधनमाला में बौद्धों की देवी तारा के समान पार्वती को स्थान दिया गया है। कमल और पूर्ण घट उन्हें ब्राह्मणधर्म की लक्ष्मी के समरूप रखते हैं।

पुराण[25] में देवी को 'पद्मावती पद्मकोषे कफे चूड़ा' कहकर वंदना की गयी है। वराहपुराण में उनका स्थान 'प' कोष में बताया गया है। यह दुस्तर संसार सागर से पार लगाने वाली, फलदायिनी, भुविमुक्ति हेतु, आयुवर्द्धन करने वाली, वन्ध्याओं को सुपुत्र

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

देने वाली तथा भौतिक समृद्धि देने वाली धनदायिका कही गयी हैं। वाङ्मय में देवी को भगवती पद्मावती, भव्यगुणा भगवती, सकल सिद्धिदातृश्री, महालक्ष्मी पद्मावती, महाशक्ति पद्मावती तथा धरणाप्रिया (धरणेन्द्र की पत्नी) कह कर ध्यान किया गया है। वह इन्द्राणी, परमपुण्यदायी और लावण्यमयी हैः

पद्मासना प दलायताक्षी पद्मानना पद्म कराङ्. घ्रिपद्या
पद्मप्रभा पार्श्व जिनेन्द्रक्ता पद्मावती पातु फणीन्द्र पली।।

वस्तुतः पद्मादेवी शक्तियों का समवाय हैंः

तारात्वं सुगतागमे भगवती गौरीति शैवागमे।
वज्रा कौलिकशासने जिनमते पद्मावती विश्रुता।
गायत्री श्रुतशालीनाम् प्रक्तिरित्युत्कासि सांख्यागमे।
मातर्भारति किं प्रभूतमणितैर्व्यपतं समस्तं त्वया।।[26]

अर्थात् हे शक्ति सम्पन्न माँ! आप बौद्धमत में तारा के रूप में, शैवमत में भगवती गौरी के रूप में, कौलमत में वज्रा के रूप में, जैनमत में पद्मावती के रूप में, वेद में गायत्री के रूप में, सांख्यमत में प्रकृति के रूप में सुख्यात है। इस प्रकार आप सर्वव्यापी हैं। यथार्थतः कोई भी धर्म या सम्प्रदाय ऐसा नहीं जो आपके महात्म्य को स्वीकार न करे। इस समस्त संसार में आप ही महाशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ब्रह्म ह वे ब्रह्माणं पुष्करे संसृजे गोपथ ब्राह्मण 6.4.1.7.
2. उपाध्याय वासुदेव, प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1982।
3. ऋग्वेद टप्.16.13 तथा टप्.33.11
4. जिमर, हेनरिख, मिथ्स एण्ड सिम्बल्स इन इंडियन आर्ट एण्ड सिविलाइजेशन, जोसेफ कैम्पबैल, बोलिंगेन सीरीज, न्यूयार्क, 1953, पृ० 90–91।
5. श्रीसूक्त, ऋग्वेद
6. यजुर्वेद, 23.8
7. तिवारी मारुतिनन्दन 'जैन एण्ड ब्राह्मनिकल आर्ट ए स्टडी इन म्यूचुआलटी', डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल स्मृति अंक, संग्रहालय पुरातत्व पत्रिका, जून–दिसम्बर,1994,अंक 53–54, पृ. 3–41
8. द्र0 जमीनदार, डॉ० रसेश, 'जैन धर्म में शक्ति स्वरूपा पद्मावती', प्रो० कृष्णदत्त वाजपेयी स्मृति विशेषांक (संपा०) डॉ० ए०एल० श्रीवास्तव, पांचाल शोध संस्थान, कानपुर, खण्ड 5, 1992, पृ0 142–43।
9. त्रिशष्टिशलाकापुरुषचरित, पर्व 7, सर्ग 3.
10. निर्वाणकलिका 18.23. अपराजितपृच्छा 22, 37
11. त्रिशष्टिशलाकापुरुषवरित (हेमचन्द्र कृत), अनु० हेलेन एम०जान्सन, गायकवाड ओरियन्टल सिरीज, बड़ौदा 9, 3, 364–65 पार्श्वनाथ चरित्र (भवदेवसूरिकृत) सं० अरगोविन्द दास बेचरदास, वाराणसी 1911, आचार दिनकर (वर्धमानसूरि कृत) बम्बई, 1923–34, पृ0 177, देवतामूर्तिप्रकरण 7.63, रूपमण्डन 6.21
12. मंत्राधिराजकल्प (सागरचन्द सूरि कृत) अहमदाबाद 3.65 प्रतिष्ठासारसंग्रह (वसुनन्दिकृत) अहमदाबाद, 5.67–77
13. रामचन्द्रन, टी०एन०, 'जैन मोन्युमेन्ट्स ऑफ फर्स्ट क्लास इम्पोर्टेन्स', कलकत्ता, 1944, पृ0 210
14. भट्टाचार्य, बी०सी०, शदि जैन आइकोनोग्राफी लाहौर, 1939, (संपा०) घोष अमलानन्द, खण्ड 3. भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 1975, पृ० 582
15. राष्ट्रीय संग्रहालय 48.4/273, द्र० जैनकला एवं स्थापत्य, (संपा) घोष अमलानन्द, खण्ड 3. भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1975, पृ० 582।
16. राष्ट्रीय संग्रहालय 47.109/124 शेष उपरोक्त, जैन कला एवं स्थापत्य, पृ० 584.
17. संकलिया, एच०डी०, जैन यक्ष एण्ड यक्षणीज, बुलेटिन ऑफ दी डकन कालेज रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना, खण्ड 1, 1940, पृ० 185–88
18. वही, पृ० 613, 614
19. वही, पृ० 616
20. देसाई, पी०बी०, यक्षी इमेजेज इन साउथ इंडियन जैनिज्म, डॉ० मिराशी फेलिसिटेशन वाल्यूम (संपा०) जी०टी० देशपाण्डेय, नागपुर, 1965, पृ० 163
21. तिवारी, मारुतिनन्दन, जैन प्रतिमा विज्ञान, वाराणसी, 1981, पृ० 236
22. मार्कण्डेय पुराण, अध्याय 86 का ध्यानम्
23. तुलनीय, भैरवपद्मावतीकल्प (दीपार्णव), पृ० 439
24. जमीनदार, डॉ० रसेश, पूर्वोक्त, पृ० 144
25. मार्कण्डेय पुराण, देवीमहात्म्य, देव्याः कवचम्, 34
26. द्र० जमीनदार, डॉ० रसेश, पूर्वोक्त।

*****